बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ बालगोबिन भगत रेखाचित्र विधा की रचना है। इसमें लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी ने एक ऐसे विलक्षण ग्राम्य चरित्र का उद्घाटन किया है, जो गृहस्थ होते हुए भी सांसारिकता से विरक्त है। वह समूची लोक-संस्कृति, मानवता तथा सामूहिक चेतना का प्रतीक है। बालगोबिन भगत के माध्यम से लेखक ने बताया है कि संन्यासी होने के लिए गेरुए वस्त्र पहनना और समाज से कटकर किसी सुनसान जंगल में कुटिया बनाकर रहना आवश्यक नहीं है; क्योंकि संन्यास का इन बातों से कोई सरोकार नहीं है। घर-गृहस्थी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

में समाज के बीच रहकर भी कोई व्यक्ति सच्चा संन्यासी हो सकता है। बालगोबिन भगत इसकी जीती-जागती मिसाल है। उन्हीं के माध्यम से लेखक ने सामाजिक रूढ़ियों पर आघात किया है और यह संदेश दिया है कि रूढ़ियों के अंधानुकरण से देश-समाज अथवा जाति का भला नहीं हो सकता। यदि हमें प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना है, मानवता को पुष्ट करना है तो थोथी हो चुकी रूढ़ियों को त्यागकर नवीनता का वरण करना ही होगा। यद्यपि यह साहस का कार्य है, जोकि प्रत्येक में नहीं होता, तथापि उसकी शुरुआत करने के लिए किसी को तो साहस जुटाना ही पड़ेगा। बालगोबिन भगत ने ऐसा ही क्रांतिकारी कदम उठाकर अपनी इकलौती विधवा बहू के पुनर्विवाह का मार्ग प्रशस्त किया। उनका यह कदम सर्वथा अनुकरणीय और स्वागत-योग्य है। इसके अतिरिक्त लेखक ने इस रेखाचित्र में ग्राम्य-जीवन की भी सजीव झाँकी प्रस्तुत की है।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

1. **बालगोबिन भगत**–प्रौढ़वय संन्यासी • कबीरपंथी • गृहस्थ साधु • सच्चे भगत • कर्मनिष्ठ • परिवार में रहकर भी संसार से विरक्त • कबीर को साहब मानने वाले • स्पष्टवक्ता • निस्पृह • मधुर गायक • निष्काम कर्मयोगी • समय के पाबंद • सुख-दुख में एकसमान (निर्विकार) रहने वाले • आत्मा को विरहिणी और परमात्मा को उसका प्रियतम मानने वाले • प्रगतिशील विचारक • रूढ़िवाद के विरोधी • अटल निश्चयी • स्वाभिमानी • नियम के पक्के।
2. **भगत का बेटा**–सुस्त और बोदा • निगरानी और मुहब्बत का हकदार • बीमार।
3. **भगत की पतोहू**–सुभग और सुशील • घर की कुशल प्रबंधिका • प्रगतिशील और रूढ़िवाद के विरुद्ध • ससुर के प्रति श्रद्धा रखने वाली।

पाठ का सारांश

बालगोबिन भगत : एक परिचय– रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित 'बालगोबिन भगत' एक ऐसा रेखाचित्र है, जिसमें बालगोबिन नाम के एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया गया है, जो मानवता, लोक-संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है।

बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। साठ से अधिक उनकी आयु होगी। बाल पक गए थे। कमर में एक लँगोटी और सिर में कबीरपंथियों की-सी टोपी उनकी वेशभूषा थी। सरदियों में एक काली कमली ऊपर ओढ़े रहते। वे मस्तक पर चंदन का रामानंदी टीका और गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते थे।

गृहस्थ, किंतु साधु– बालगोबिन भगत साधु नहीं थे, गृहस्थ थे। उनके बेटे-बहू थे। थोड़ी खेतीबाड़ी थी। एक अच्छा साफ़-सुथरा मकान भी था। खेतीबाड़ी करते, परिवार रखते हुए भी बालगोबिन भगत सच्चे साधु थे। कबीर को 'साहब' मानते, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते थे। कभी झूठ न बोलते, सभी से खरा व्यवहार रखते। किसी से फ़िज़ूल झगड़ा भी मोल न लेते थे।

कबीरपंथी– किसी की चीज़ नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता! कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज़ 'साहब' की थी। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते–जो उनके घर से चार कोस दूर था–एक कबीरपंथी मठ। वह दरबार में 'भेंट' रख लिए जाने के बाद 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुज़र चलाते।

परमभक्त– आषाढ़ की फुहार में बालगोबिन भगत कबीर साहब की पंक्तियाँ गाते हुए धान रोप रहे थे। सभी मुग्ध हैं। भादों की अँधेरी रात में भी बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है!–तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफ़िर जाग ज़रा! कार्तिक मास हो या गरमियाँ, बालगोबिन भगत का संगीत उनकी खँजड़ी पर चलता रहता।

संसार में रहकर सांसारिक माया-मोह से विरक्त– बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन दिखाई दिया, जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज़्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए; क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज़्यादा हकदार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी। पुत्रवधू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की सेविका बनकर बालगोबिन भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत, किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढक रखा है। सिरहाने एक चिराग जला रखा है और उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता। घर में पुत्रवधू रो रही है, जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं। किंतु बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं! हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पुत्रवधू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा-परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात? मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे, उसमें उनका विश्वास बोल रहा था–वह चरम विश्वास, जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

रूढ़ियों के खंडन का साहसी कदम– बेटे के क्रिया-कर्म को तूल नहीं दिया, पुत्रवधू से ही चिता में आग दिलाई उसको। किंतु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पुत्रवधू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। उनकी जाति में पुनर्विवाह कोई नई बात नहीं, किंतु पुत्रवधू का आग्रह था कि वह यहीं रहकर भगत जी की सेवा-बंदगी में अपने वैधव्य के दिन गुज़ार देगी। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो मैं इस घर को छोड़कर चल दूँगा–यही थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे पुत्रवधू की क्या चलती?

बालगोबिन भगत का महाप्रयाण– बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उन्हीं के अनुरूप हुई। वे हर वर्ष गंगास्नान करने जाते। इस बार भी गए। लौटे तो तबीयत सुस्त थी। खाने-पीने के बाद तबीयत नहीं सुधरी, बुखार आने लगा। नेमव्रत उन्होंने फिर भी न छोड़ा। एक दिन संध्या में गीत गाए, रात को जीवन की डोर टूट गई, माला का एक-एक दाना बिखर गया। सुबह लोगों ने गीत न सुना तो पता चला कि बालगोबिन भगत नहीं रहे।

इस प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी रचित 'बालगोबिन भगत' रेखाचित्र, हृदय को झकझोर देने वाला सफल रेखाचित्र है।

शब्दार्थ

मँझोले = न बहुत बड़ा, न ज्यादा छोटा। **कमली** = कंबल। **पतोहू** = पुत्रवधू, पुत्र की स्त्री। **खामखाह** = व्यर्थ। **कुतूहल** = आश्चर्य। **मुग्ध** = मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, आसक्त, मोहित। **रोपनी** = खेत में धान की पौध लगाना। **कलेवा** = सवेरे का जलपान। **पुरवाई** = पूरब की ओर से बहनेवाली हवा। **अधरतिया** = आधी रात। **दादुर** = मेंढक। **खँजड़ी** = ढपली के ढंग का, किंतु आकार में उससे छोटा एक वाद्य-यंत्र। **प्रभातियाँ** = प्रातःकाल गाया जानेवाला गीत। **लोही** = प्रातःकाल की लालिमा। **कुहासा** = कुहरा। **आवृत्त** = ढका हुआ। **कुशा** = एक प्रकार की नुकीली घास। **सुरूर** = नशा। **श्रमबिंदु** = पसीना।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

साँझ = संध्या, सायंकाल। **बोदा** = कमजोर, कम बुद्धिवाला। **साध** = अभिलाषा। **सुभग** = सुंदर, मनोहर, भाग्यवान्। **चिराग** = दीपक। **नजदीक** = निकट। **तूल नहीं किया** = बात को बढ़ाया नहीं। **दलील** = तर्क। **संबल** = सहारा। **हक** = अधिकार, टेक, दृढ़ संकल्प, हठ, जिद। **जून** = समय। **छीजना** = क्षीण होना, कम होना।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) किंतु खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे– साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज़ नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता!– कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते! वह गृहस्थ थे; लेकिन उनकी सब चीज़ 'साहब' की थीं। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते– जो उनके घर से चार कोस दूर था– एक कबीरपंथी मठ! वह दरबार में 'भेंट' रख लिए जाने के बाद 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुज़र चलाते! ***(CBSE 2020)***

1. **लेखक ने बालगोबिन भगत को साधु क्यों कहा–**
   (क) वे साधुओं की वेशभूषा पहनते थे
   (ख) हर समय तपस्या में लीन रहते थे
   (ग) मोह-माया से दूर थे
   (घ) साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरते थे।
2. **बालगोबिन भगत का कौन-सा कार्य व्यवहार लोगों के अचरज का विषय था–**
   (क) नियमों और सिद्धांतों का गहराई से पालन करना
   (ख) हर समय कबीर के भजन गाना
   (ग) किसी से झगड़ा मोल न लेना
   (घ) अपना काम स्वयं करना।
3. **बालगोबिन भगत कबीर के आदर्शों पर चलते थे; क्योंकि–**
   (क) कबीर भगवान का रूप थे
   (ख) वे कबीर को अपना साहब मानते थे
   (ग) कबीर उनके गाँव के मुखिया थे
   (घ) कबीर एक कवि थे।
4. **भगत अपने खेत की सारी उपज पहले किसे भेंट करते थे–**
   (क) गरीबों को (ख) साधुओं को
   (ग) कबीरपंथी मठ को (घ) अपने संबंधियों को।
5. **बालगोबिन भगत की विशेषता नहीं है–**
   (क) वे कभी झूठ नहीं बोलते थे
   (ख) सबसे खरा व्यवहार रखते थे
   (ग) किसी से बिना बात झगड़ा मोल नहीं लेते थे
   (घ) वे बहुत स्वार्थी थे।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(2) किंतु बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं! हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात? मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे, उसमें उनका विश्वास बोल रहा था–वह चरम विश्वास, जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है। ***(CBSE 2016)***

1. **पुत्र के शव के पास बैठकर बालगोबिन भगत क्या कर रहे थे–**
   (क) रो रहे थे (ख) भजन गा रहे थे
   (ग) हँस रहे थे (घ) गीता पढ़ रहे थे।
2. **भगत अपनी पतोहू को रोने के बदले क्या करने के लिए कहते हैं–**
   (क) उत्सव मनाने के लिए कहते हैं
   (ख) भोजन बनाने के लिए कहते हैं
   (ग) गीत गाने के लिए कहते हैं
   (घ) नृत्य करने के लिए कहते हैं।
3. **'विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली।' का आशय है–**
   (क) नायिका नायक से मिल गई
   (ख) एक पत्नी अपने पति के पास चली गई
   (ग) आत्मा परमात्मा से मिल गई
   (घ) गोपियाँ श्रीकृष्ण से मिल गई।
4. **'मैं कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गया।'– कथन में 'मैं' कौन है–**
   (क) कबीर (ख) लेखक
   (ग) गाँव का मुखिया (घ) बालगोबिन भगत।
5. **पुत्र की मृत्यु भी भगत के विचार से आनंद की बात क्यों थी–**
   (क) जीवात्मा और ईश्वर का मिलन आनंददायक होता है
   (ख) भगत अपने पुत्र से बहुत दुःखी थे
   (ग) वे उत्तरदायित्व से मुक्त हो गए थे
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क)।

(3) बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया; पतोहू से ही चिता में आग दिलाई उसकी। किंतु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। इधर पतोहू रो-रोकर कहती– मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। ***(CBSE 2015)***

1. **भगत ने बेटे के क्रिया-कर्म में तूल क्यों नहीं किया–**
   (क) वह प्रचलित मान्यताओं को उचित नहीं मानते थे
   (ख) उन्हें क्रिया-कर्म का ज्ञान नहीं था
   (ग) वह अपने बेटे से प्यार नहीं करते थे
   (घ) उन्हें दिखावा पसंद नहीं था।
2. **भगत पतोहू की दूसरी शादी कराना चाहते थे; क्योंकि–**
   (क) वह पतोहू से घृणा करते थे
   (ख) वह विधवा-विवाह के समर्थक थे
   (ग) वह विधवा को अशुभ मानते थे
   (घ) उनकी पतोहू की यही इच्छा थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **पतोहू भगत के चरणों में ही क्यों रहना चाहती थी–**
(क) वह उनकी सेवा और देखभाल करना चाहती थी
(ख) वह बहुत डरपोक थी
(ग) उसे उस घर से बहुत मोह था
(घ) वह भगत को भगवान मानती थी।

4. **बालगोबिन भगत ने बेटे की चिता में आग किससे दिलवाई–**
(क) अपनी पत्नी से (ख) अपनी पुत्री से
(ग) अपनी पतोहू से (घ) अपने भाई से।

5. **गद्यांश में भगत की पतोहू के व्यवहार से उसकी किस भावना का पता चलता है–**
(क) त्याग और सेवाभाव की
(ख) लालच की
(ग) समाज सेवा की
(घ) स्वार्थभाव की।

उत्तर—**1.** (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (क)।

(4) बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। वह हर वर्ष गंगा-स्नान करने जाते। स्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते, जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर। पैदल ही जाते। करीब तीस कोस पर गंगा थी। साधु को संबल लेने का क्या हक? और गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे? अतः घर से खाकर चलते तो फिर घर पर ही लौटकर खाते। रास्तेभर खँजड़ी बजाते-गाते, जहाँ प्यास लगती, पानी पी लेते। चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते; किंतु इस लंबे उपवास में भी वही मस्ती। अब बुढ़ापा आ गया था, किंतु टेक वह जवानी वाली। इस बार लौटे तो तबीयत कुछ सुस्त थी। खाने-पीने के बाद भी तबीयत नहीं सुधरी, थोड़ा बुखार आने लगा। किंतु नेम-व्रत तो छोड़ने वाले नहीं थे। वही दोनों जून गीत, स्नानध्यान, खेतीबारी देखना दिन-दिन छीजने लगे। लोगों ने नहाने-धोने से मना किया, आराम करने को कहा। किंतु हँसकर टालते रहे। उस दिन भी संध्या में गीत गाए, किंतु मालूम होता जैसे तागा टूट गया हो, माला का एक-एक दाना बिखरा हुआ। भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, सिर्फ उनका पंजर पड़ा है। ***(CBSE 2015, 16)***

1. **बालगोबिन हर वर्ष कहाँ जाते थे–**
(क) विदेश यात्रा पर (ख) गंगा-स्नान के लिए
(ग) अपने गुरु के पास (घ) साहब के दरबार में।

2. **भगत का गंगा-स्नान करने जाने का उद्देश्य था–**
(क) संत समागम और लोक-दर्शन
(ख) गंगा-स्नान का पुण्य कमाना
(ग) स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करना
(घ) लोगों को अपना नियम-व्रत दिखाना।

3. **भगत को संबल लेने का हक क्यों नहीं था–**
(क) वे गृहस्थ थे
(ख) वे वृद्ध हो चुके थे
(ग) वे स्वयं को साधु मानते थे
(घ) वे उच्च-जाति के थे।

4. **बीमार होने पर भी भगत द्वारा नेम-व्रत न छोड़ने का क्या परिणाम हुआ–**
(क) वे स्वस्थ होने लगे
(ख) वे दिन-दिन छीजने लगे
(ग) वे महान संत बन गए
(घ) उन्होंने पुण्य अर्जित कर लिया।

5. **भोर में क्या हुआ–**
(क) लोगों ने बालगोबिन भगत के गीत सुने।
(ख) लोगों ने बालगोबिन भगत को मृत देखा।
(ग) लोगों ने भगत को स्वस्थ देखा।
(घ) लोगों ने भगत के घर को खाली देखा।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(5) कार्तिक आया नहीं कि बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुईं, जो फागुन तक चला करतीं। इन दिनों वह सवेरे ही उठते। न जाने किस वक्त जागकर वह नदी-स्नान को जाते–गाँव से दो मील दूर। वहाँ से नहा-धोकर लौटते और गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजड़ी लेकर जा बैठते और अपने गाने टेरने लगते। मैं शुरू से ही देर तक सोने वाला हूँ। किंतु, एक दिन, माघ की उस दाँत कट-कटानेवाली भोर में भी, उनका संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। अभी आसमान के तारों के दीपक बुझे नहीं थे। हाँ, पूरब में लोही लग गई थी जिसकी लालिमा शुक्रतारा और बढ़ा रहा था। खेत, बगीचा, घर सब पर कुहासा छा रहा था। सारा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत्त मालूम होता था। उस रहस्यमय वातावरण में एक कुश की चटाई पर पूरब मुँह, काली कमली ओढ़े बालगोबिन भगत अपनी खँजड़ी लिए बैठे थे। उनके मुँह से शब्दों का ताँता लगा था और उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं। गाते-गाते इतने मस्त हो जाते, इतने सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते कि मालूम होता अब खड़े हो जाएँगे। ***(CBSE 2021 Term-1)***

1. **प्रस्तुत गद्यांश में किस तरह का उल्लेख नहीं हुआ हैं–**
(क) आश्विन (ख) कार्तिक
(ग) फागुन (घ) माघ।

2. **बालगोबिन भगत गाते-गाते मस्त हो जाते, सुरूर में आते, उत्तेजित हो उठते, से आप क्या समझते हैं–**
(क) जाड़े के कारण काँपने लगाना
(ख) संगीत के आनंद में डूब नहीं पाना
(ग) साहब की प्रसन्नता के लिए गाना
(घ) गाने की धुन में खुद की सुध-बुध खो देना।

3. **भगत के विषय में इनमें से कौन-सी बात सही नहीं है–**
(क) वह सवेरे ही जागकर गाँव से दो मील दूर नदी-स्नान के लिए जाते थे
(ख) गाँव के बाहर पोखर के ऊँचे भिंडे पर बैठ कबीर के पद गाते थे
(ग) बहुत अधिक सर्दी में उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर चल नहीं पाती थीं
(घ) भगत पूरब की ओर मुँह किए काली कमली ओढ़कर बैठते थे।

4. **लेखक ने अपनी दिनचर्या के बारे में अलग से रेखांकित करने वाली कौन-सी बात बताई है–**
(क) वह रोज सुबह जल्दी उठ जाते हैं
(ख) वह शुरू से ही देर तक सोने वाले व्यक्ति हैं
(ग) आमतौर पर वे जल्दी उठ जाने वाले व्यक्ति हैं
(घ) जाड़े के मौसम में वे देर तक सोते हैं।

5. **'पूरब में लोही लग गई थी'– वाक्य का अर्थ है–**
(क) पूरब में सूरज पूरा निकल गया
(ख) पूरब दिशा में चाँद खूब चमक रहा है
(ग) शुक्र तारे की चमक आसमान में बढ़ रही है
(घ) पूरब में सूर्य निकलने से पहले की लालिमा है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (घ)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **साधु की पहचान किससे होती है–**
(क) वेशभूषा से (ख) तिलक छाप से
(ग) आचार-विचार से (घ) जटा-जूट से।

2. **बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी साधु थे; क्योंकि–**
(क) वे साधुता की सभी परिभाषाओं पर खरे उतरते थे
(ख) वे गेरुए वस्त्र पहनते थे
(ग) वे जटा धारण किए हुए थे
(घ) वे सारा दिन तपस्या करते थे।

3. **बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व से संबंधित नहीं है–**
(क) मँझोला शरीर और गोरा रंग
(ख) कमर में एक लँगोटी और सिर पर कबीरपंथी टोपी
(ग) मस्तक पर रामानंदी तिलक
(घ) गले में मोतियों की माला।

4. **भगत अपना 'साहब' किसे मानते थे–**
(क) श्रीराम को (ख) श्रीकृष्ण को
(ग) कबीर को (घ) तुलसी को।

5. **बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा का क्या कारण था–**
(क) कबीर भगवान के अवतार थे
(ख) कबीर ने गृहस्थ होकर भी साधु जैसा जीवन बिताया
(ग) कबीर एक अच्छे गायक थे
(घ) कबीर एक महान कवि थे।

6. **आषाढ़ की रिमझिम में क्या होता है–**
(क) चारों ओर हरियाली फैल जाती है
(ख) सारा गाँव खेतों में उतर पड़ता है
(ग) पेड़ों पर नए-नए पत्ते आ जाते हैं
(घ) किसान गेहूँ की फसल बोते हैं।

7. **बालगोबिन भगत के संगीत की विशेषता नहीं है–**
(क) उनका स्वर बहुत मधुर था
(ख) वे स्वर के आरोह-अवरोह का ध्यान रखते थे
(ग) गाते समय अपनी खँजड़ी भी बजाते थे
(घ) वे केवल तुलसी के भजन ही गाते थे।

8. **लेखक ने भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा–**
(क) जिस दिन उनका बेटा मरा
(ख) जिस दिन वे गंगा-स्नान को गए
(ग) जिस दिन उन्होंने रात्रि में भजन गाए
(घ) जिस दिन आषाढ़ की रिमझिम प्रारंभ हुई।

9. **बालगोबिन भगत का बेटा कैसा था–**
(क) स्वस्थ और सुंदर (ख) कमज़ोर और बीमार
(ग) बहुत विद्वान (घ) लंबा और तगड़ा।

10. **बेटे की मृत्यु के बाद भगत ने अपनी पतोहू को क्या आदेश दिया–**
(क) अपने घर जाने और दूसरा विवाह करने का
(ख) तीर्थ-यात्रा करने का
(ग) संन्यास धारण करने का
(घ) कभी घर से बाहर न निकलने का।

11. **'गठरी में लागा चोर मुसाफ़िर जाग ज़रा' में गठरी, चोर, मुसाफ़िर किसके प्रतीक हैं–**
(क) धन, डाकू और यात्री (ख) गाड़ी, डाकू और सिपाही
(ग) आयु, समय और मनुष्य (घ) पोटली, आदमी और गाड़ी।

12. **किस घटना के आधार पर कहा जा सकता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे?** *(CBSE 2023)*
(क) जवान बेटे की मृत्यु पर गा रहे थे
(ख) हर वर्ष गंगा-स्नान के लिए जाते
(ग) अपनी खेती-बाड़ी स्वयं करते
(घ) बेटे का क्रिया-कर्म बहू से करवाया।

13. **'बालगोबिन भगत के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?** *(CBSE SQP 2023-24)*
(क) आडंबर से दूर रहकर ईश्वर भक्ति करने की
(ख) कृषि आधारित जीवन व्यतीत करने की
(ग) सामाजिक रूढ़ियों का समर्थन करने की
(घ) पूजा-पाठ और यज्ञ आदि करने की।

14. **बालगोबिन के घर से गंगा कितनी दूर थी–**
(क) पचास कोस (ख) बीस कोस
(ग) तीस कोस (घ) चालीस कोस।

15. **बालगोबिन भगत के संगीत के प्रभाव के विषय में सही नहीं है–**
(क) बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं
(ख) मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं
(ग) हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं
(घ) मोर नाचने लगते हैं।

16. **'कबीरपंथी' का अर्थ है–**
(क) कबीर के आश्रम में रहने वाला
(ख) कबीर के भजन गाने वाला
(ग) कबीर का अनुयायी
(घ) कबीर के आश्रम का मार्ग।

17. **बालगोबिन के कितने पुत्र थे–**
(क) चार (ख) तीन
(ग) एक (घ) दो।

18. **'धीरे-धीरे मन तन पर हावी हो जाता।' का आशय है–**
(क) सभी ऊँचे स्वर में गाने लगते
(ख) सभी भजन के आनंद में सुध-बुध खो बैठते
(ग) सभी नृत्य करने लगते
(घ) सभी भगत की जय-जयकार करने लगते।

19. **पाठ को पढ़कर बालगोबिन भगत की कैसी छवि उभरती है–**
(क) कुशल गृहस्थ की (ख) साधु की
(ग) गृहस्थ और साधु की (घ) एक वैरागी की।

20. **'तारों के दीपक बुझे नहीं थे।'– से क्या आशय है–**
(क) सूर्य चमकने लगा था
(ख) दोपहर का समय
(ग) गहन रात्रि का समय
(घ) भोर का वह समय जब तारे भी चमकते रहते हैं।

21. **बेटे की मृत्यु के पश्चात् बालगोबिन भगत का आखिरी निर्णय क्या था–** *(CBSE SQP 2021)*
(क) पतोहू का पुनर्विवाह करवाना (ख) पतोहू को शिक्षा दिलवाना
(ग) पतोहू को घर से निकालना (घ) पतोहू से घृणा करना।

22. **लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी जी बालगोबिन भगत की किस विशेषता पर अत्यधिक मुग्ध थे–** *(CBSE SQP 2021)*
(क) पहनावे पर (ख) व्यवहार पर
(ग) मधुर गान पर (घ) कार्य कुशलता पर।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (ग) **12.** (घ) **13.** (क) **14.** (ग) **15.** (घ) **16.** (ग) **17.** (ग) **18.** (ख) **19.** (ग) **20.** (घ) **21.** (क) **22.** (ग)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'बालगोबिन भगत' शीर्षक पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है? अपने शब्दों में लिखिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर: 'बालगोबिन भगत' पाठ में स्त्रियों को विधवा विवाह न करने और उन्हें श्मशान में जाकर किसी का दाह संस्कार न करने जैसी सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है।

प्रश्न 2 : भगत प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे। किस घटना के आधार पर यह सिद्ध होता है?

***अथवा* लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार बालगोबिन भगत ने किस प्रकार प्रचलित सामाजिक मान्यताओं का खंडन किया?** *(CBSE 2015, 16)*

***अथवा* 'बालगोबिन भगत' पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है?** *(CBSE 2018)*

उत्तर: भगत जी प्रचलित मान्यताओं को आँख बंद करके नहीं मानते थे। वे जानते थे कि इस समाज में पत्नी को पति की चिता में आग देने की अनुमति नहीं है, फिर भी उन्होंने अपनी पुत्रवधू से अपने बेटे की चिता में आग दिलवाई। यहाँ तक कि उसे पुनर्विवाह करने की आज्ञा देकर भाई के साथ भेज दिया। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर शोक नहीं उत्सव मनाया। उनके अनुसार उनके बेटे की आत्मा का मिलन परमात्मा से हुआ है तो यह बात खुशी मनाने की है। वे उसके मृत शरीर के सामने बैठकर भक्ति पद गाते रहे। इन तीनों ही घटनाओं से सिद्ध होता है कि भगत समाज में प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे।

प्रश्न 3 : 'मोह और प्रेम में अंतर होता है।' बालगोबिन भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर आप इस कथन को सच सिद्ध करेंगे?

उत्तर: मोह और प्रेम दोनों में ही लगाव होता है, लेकिन दोनों में अंतर यह है कि मोह में स्वार्थ होता है और प्रेम में त्याग होता है। बालगोबिन भगत के जीवन की घटना से इनका अंतर स्पष्ट होता है। पुत्र की मृत्यु के उपरांत उन्होंने अपनी पतोहू को पुनर्विवाह के लिए भेज दिया; क्योंकि वे उसे पुत्रीवत् प्रेम करते थे। यह उनका त्याग था। यदि वे उसे अपनी सेवा के लिए अपने पास ही रखते तो यह उनका मोह होता। इस प्रकार उन्होंने मोह और प्रेम के अंतर को स्पष्ट कर दिया।

प्रश्न 4 : बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व एवं वेशभूषा का चित्र अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर: बालगोबिन भगत एक सद्गृहस्थ थे, परंतु उनका व्यक्तित्व भक्तों की तरह था। साठ वर्ष के भगत बेहद कम कपड़े पहनते थे। सरदियों में एक काला कंबल ओढ़ लेते थे। वे मँझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनके सारे बाल सफ़ेद हो गए थे, इससे उनका चेहरा जगमगाता-सा लगता था। उनके माथे पर रामानंदी चंदन सुशोभित होता था, जो नाक के किनारे से शुरू होता था। उनके गले में तुलसी की एक माला बँधी रहती थी। भगत सिर पर कबीरपंथियों की एक कनफटी टोपी भी धारण किए रहते थे और सदा ही खँजड़ी की लय पर प्रभु भक्ति के गीत गाते रहते थे। भगत एक सच्चे साधु थे।

प्रश्न 5 : बालगोबिन भगत के किन गुणों के कारण लोगों को कुतूहल होता था?

***अथवा* बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?**

उत्तर: बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों में कुतूहल पैदा करती थी। भगत रात में उठकर दो मील दूर स्थित नदी में स्नान करने जाते और वापस आकर भोर में गाँव के बाहर स्थित पोखर के किनारे बैठकर प्रभु भक्ति के गीत गाते थे। सरदी-गरमी-बरसात किसी भी मौसम में इनका यह क्रम नहीं टूटने से लोगों को अचरज होता था। भगत की सरलता, सादगी और निःस्वार्थ भावना तथा बिना पूछे किसी की वस्तु को हाथ भी न लगाना जैसे गुणों को देखकर भी सभी में कुतूहल होता था।

प्रश्न 6 : खेतीबाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

उत्तर: बालगोबिन भगत खेतीबाड़ी करते थे। वे एक गृहस्थ थे। उनका परिवार था, जिसमें पुत्र और पतोहू थे। फिर भी अपनी कुछ विशेषताओं के कारण वे साधु कहलाते थे। वे साधुओं जैसी वेशभूषा पहनते थे। कभी झूठ नहीं बोलते थे। सभी से खरा व्यवहार करते थे। बिना पूछे किसी की कोई चीज़ नहीं छूते थे। कबीर को अपना साहब मानते थे और नित्य उनके भजन गाते थे। ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ, लोभ, अहंकार आदि से वे बहुत दूर थे। इस प्रकार साधु की सभी परिभाषाओं पर वे खरे उतरते थे।

प्रश्न 7 : भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेला क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी? *(CBSE 2015)*

उत्तर: भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेला इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी; क्योंकि भगत की उम्र अधिक हो गई थी। इस आयु में वह किसी के सहारे के बिना नहीं रह सकते थे। यदि वह बालगोबिन भगत की बात मानकर अपने भाई के साथ चली गई तो उनकी देखभाल करने वाला, उनके खाने-पीने का ध्यान रखने वाला कोई नहीं रहेगा। यदि वह बीमार पड़ गए तो उन्हें एक चुल्लू पानी देने वाला भी कोई नहीं होगा।

प्रश्न 8 : आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर: कबीर मूलतः एक संतकवि थे, परंतु धर्म के बाहरी आचार-व्यवहार तथा कर्मकांडों में उनकी लेशमात्र भी आस्था नहीं थी। धर्म और समाज में व्याप्त संकीर्णताओं को देखकर उनका मन व्याकुल हो उठता था और उनकी व्यंग्यपूर्ण वाणी से विद्रोही स्वर मुखरित होने लगता था। वस्तुतः कबीर का ऐसा अद्भुत व्यक्तित्व था, जिसने रूढ़ि और परंपरा की जर्जर दीवारों को धराशायी कर दिया और फिर एकता की मज़बूत नींव पर मानवता का विशाल दुर्ग खड़ा किया। कबीर फक्कड़ प्रवृत्ति के संत थे। उन्होंने निडरता के साथ समाज में फैले आडंबरों का विरोध किया और अज्ञान में डूबी हुई मानवता को नया प्रकाश दिया। संभवतः इन्हीं कारणों से भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा रही होगी।

प्रश्न 9 : 'बालगोबिन भगत' पाठ के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

***अथवा* बालगोबिन किस संत के अनुयायी थे? उसका उन पर कितना प्रभाव था?**

उत्तर: बालगोबिन भगत कबीरपंथी थे। वे कबीरपंथियों की-सी टोपी लगाते थे। माथे पर रामानंदी टीका और गले में तुलसी की जड़ों की माला

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पहनते थे। वे कबीर को साहब मानते और उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदर्शों पर चलते थे। जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे कबीरपंथी मठ में ले जाते और भेंट करते। प्रसादस्वरूप जो भी वहाँ से वापस मिलता, उसी से अपना गुज़ारा करते। पुत्र की मृत्यु पर भी वे रोए नहीं, बल्कि आत्मा के परमात्मा से मिलन के कबीर के भाव को अपने गीतों में साकार करते प्रतीत होते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि बालगोबिन भगत की कबीर पर अटूट श्रद्धा थी।

प्रश्न 10 : बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ कैसे व्यक्त कीं?

उत्तर : बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाओं को इस प्रकार प्रकट किया– उन्होंने अपने मृतक बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढक दिया। उसके ऊपर फूल एवं तुलसीदल डाल दिए एवं सिरहाने एक चिराग जला दिया। मृतक पुत्र के समीप ही ज़मीन पर अपना आसन बिछाकर हमेशा की तरह कबीर के पद गाने लगे। उनकी पुत्रवधू उस समय रो रही थी। ऐसे में भगत जी ने उसे रोने की बजाए खुश होकर उत्सव मनाने को कहा और समझाया कि यह समय आत्मा-परमात्मा के मिलन का है, शोक मनाने का नहीं। वे इसे आनंद की स्थिति मान रहे थे और इस समय बहुत ही संयमित थे।

प्रश्न 11 : बालगोबिन भगत की पुत्रवधू की ऐसी कौन-सी इच्छा थी, जिसे वे पूरा न कर सके? कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : बालगोबिन भगत के इकलौते पुत्र की मृत्यु हो गई थी। उनकी पुत्रवधू की यह इच्छा थी कि वह अपना शेष जीवन भगत की सेवा में बिताए। वह उन्हें अकेला छोड़ना नहीं चाहती थी। उसे लगता था कि बुढ़ापे में कौन भगत के खाने-पीने का ध्यान रखेगा? बीमारी में कौन सहायता करेगा? लेकिन उसकी इस इच्छा को बालगोबिन भगत ने पूरा नहीं किया और बेटे के क्रिया-कर्म के उपरांत उसके भाई को यह आदेश दिया कि वह शीघ्र ही उसका पुनर्विवाह कर दे। इसका कारण यह था कि उसकी आयु अभी बहुत कम थी अर्थात् वह युवा ही थी तथा दूसरे भगत विधवा विवाह के पक्षधर थे।

प्रश्न 12 : लेखक ने बालगोबिन भगत के घर ऐसा क्या देखा कि दंग रह गए?

अथवा **बालगोबिन भगत के बेटे की मृत्यु का समाचार मिलने पर जब लेखक उनके घर पहुँचे, तब उन्होंने भगत को क्या करते देखा?** *(CBSE 2015, 16)*

उत्तर : लेखक ने जब भगत के पुत्र के निधन की खबर सुनी तो वे उनका हाल जानने की सोचकर उनके घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने अद्भुत दृश्य देखा। भगत ने अपने मृत बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटा रखा था। उसके ऊपर सफ़ेद कपड़ा ढँककर आस-पास फूल बिखेरकर एक दीपक जला रखा था। उसके सामने आसन जमाए तल्लीन होकर वे प्रभु-भक्ति के गीत गा रहे थे। लेखक यह दृश्य देखकर दंग रह गए।

प्रश्न 13 : बालगोबिन के मधुरगायन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : बालगोबिन भगत का स्वर बहुत मधुर था। वे हमेशा कबीर के भजन ही गाते थे। गाते समय अपनी खँजड़ी भी बजाते थे और स्वर के आरोह-अवरोह का बहुत ध्यान रखते थे। स्त्री-पुरुष अपने घरों से निकलकर उन्हें घेर कर बैठ जाते थे। भगत गाते-गाते झूमने लगते थे। उनके साथ वहाँ उपस्थित स्त्री-पुरुष भी झूमने लगते थे और अपना दुःख-दर्द भूल जाते थे।

प्रश्न 14 : बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे से बेटे के साथ कैसा व्यवहार करते थे और क्यों? *(CBSE 2019)*

उत्तर : बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे से बेटे के साथ बहुत स्नेह और सहानुभूति का व्यवहार करते थे। वे उसकी बहुत देखभाल करते थे। उनका विचार था कि ऐसे व्यक्ति देखभाल और सहानुभूति के अधिक हक़दार होते हैं।

प्रश्न 15 : बालगोबिन भगत के गीतों का खेतों में काम करते और आते-जाते नर-नारियों पर क्या प्रभाव पड़ता था? *(CBSE 2020)*

उत्तर : बालगोबिन भगत के गीत सुनकर खेलते हुए बच्चे झूम उठते, मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँपने लगते, वे गुनगुनाने लगतीं, हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते, रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एकाएक अजीब क्रम में चलने लगतीं। इस प्रकार सब पर भगत के संगीत का जादू-सा छा जाता था।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। वह हर वर्ष गंगा-स्नान करने जाते। स्नान पर उतनी आस्था नहीं रखते, जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर। पैदल ही जाते। करीब तीस कोस पर गंगा थी। साधु को संबल लेने का क्या हक? और गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे? अतः घर से खाकर चलते तो फिर घर पर ही लौटकर खाते। रास्तेभर खँजड़ी बजाते-गाते, जहाँ प्यास लगती, पानी पी लेते। चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते; किंतु इस लंबे उपवास में भी वही मस्ती। अब बुढ़ापा आ गया था, किंतु टेक वह जवानी वाली। इस बार लौटे तो तबीयत कुछ सुस्त थी। खाने-पीने के बाद भी तबीयत नहीं सुधरी, थोड़ा बुखार आने लगा। किंतु नेम-व्रत तो छोड़ने वाले नहीं थे। वही दोनों जून गीत, स्नानध्यान, खेतीबारी देखना दिन-दिन छीजने लगे। लोगों ने नहाने-धोने से मना किया, आराम करने को कहा। किंतु हँसकर टालते रहे। उस दिन भी संध्या में गीत गाए, किंतु मालूम होता जैसे तागा टूट गया हो, माला का एक-एक दाना बिखरा हुआ। भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, सिर्फ़ उनका पंजर पड़ा है।

1. बालगोबिन हर वर्ष कहाँ जाते थे–

(क) विदेश यात्रा पर (ख) गंगा-स्नान के लिए

(ग) अपने गुरु के पास (घ) साहब के दरबार में।

2. भगत का गंगा-स्नान करने जाने का उद्देश्य था–

(क) संत समागम और लोक-दर्शन

(ख) गंगा-स्नान का पुण्य कमाना

(ग) स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करना

(घ) लोगों को अपना नियम-व्रत दिखाना।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. **भगत को संबल लेने का हक क्यों नहीं था–**
   (क) वे गृहस्थ थे
   (ख) वे बृद्ध हो चुके थे
   (ग) वे स्वयं को साधु मानते थे
   (घ) वे उच्च-जाति के थे।
4. **बीमार होने पर भी भगत द्वारा नेम-व्रत न छोड़ने का क्या परिणाम हुआ–**
   (क) वे स्वस्थ होने लगे
   (ख) वे दिन-दिन छीजने लगे
   (ग) वे महान संत बन गए
   (घ) उन्होंने पुण्य अर्जित कर लिया।
5. **भोर में क्या हुआ–**
   (क) लोगों ने बालगोबिन भगत के गीत सुने
   (ख) लोगों ने बालगोबिन भगत को मृत देखा
   (ग) लोगों ने भगत को स्वस्थ देखा
   (घ) लोगों ने भगत के घर को खाली देखा।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा का क्या कारण था–**
   (क) कबीर भगवान के अवतार थे
   (ख) कबीर ने गृहस्थ होकर भी साधु जैसा जीवन बिताया
   (ग) कबीर एक अच्छे गायक थे
   (घ) कबीर एक महान कवि थे।
7. **बालगोबिन भगत का बेटा कैसा था–**
   (क) स्वस्थ और सुंदर (ख) कमज़ोर और बीमार
   (ग) बहुत विद्वान (घ) लंबा और तगड़ा।
8. **बेटे की मृत्यु के पश्चात् बालगोबिन भगत का आखिरी निर्णय क्या था–**
   (क) पतोहू का पुनर्विवाह करवाना
   (ख) पतोहू को शिक्षा दिलवाना
   (ग) पतोहू को घर से निकालना
   (घ) पतोहू से घृणा करना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **भगत प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे। किस घटना के आधार पर यह सिद्ध होता है?**

   अथवा **लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार बालगोबिन भगत ने किस प्रकार प्रचलित सामाजिक मान्यताओं का खंडन किया?**

   अथवा **'बालगोबिन भगत' पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है?**
10. **आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?**
11. **बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ कैसे व्यक्त कीं?**
12. **बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे से बेटे के साथ कैसा व्यवहार करते थे और क्यों?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in